भगत सिंह के विचार

साम्प्रदायिक दंगे और उनका इलाज

-डॉ. जुगल किशोर गुप्ता

देश के महान शहीद, क्रान्तिकारी और स्वतंत्रता सेनानी भगत सिंह की पुण्य तिथि 23 मार्च को देश भर में अनेक स्थानों पर उनको श्रद्धांजली अर्पित करने के लिए विभिन्न संस्थाओं द्वारा समारोह आयोजित किए जाएंगे। इनमें से प्रमुख समारोह पंजाब के फिरोजपुर जिले के हुसैनीवाला में प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है। पड़ोसी देश पाकिस्तान के समाचारपत्र के अनुसार भगत सिंह के पैतृक गांव चक संख्या 105 जी बी (वर्तमान बंगा गांव, लायलपुर ज़िला) में वह मकान जहां उनका जन्म हुआ था को विरासत साईट के रूप में संरक्षित रखने के प्रयत्न किए जा रहे हैं, और इसके लिए धन राशि का आबंटन भी कर दिया है। उस मकान में उनके परिवार का कुछ सामान अब भी संजोकर रखा हुआ है जिनमें उनकी मां का चर्खा, तांबे की बड़ी परांत, लकड़ी के दो संदूक व लोहे की एक भारी अल्मारी है। अब उस मकान में वकील मुहम्मद इकबाल विर्क रहते हैं जो इन सब सामान की पूरी देखभाल करते हैं। इसके साथ ही लाहौर के सैन्ट्रल ज़ेल में वह स्थान जहां भगत सिंह, राजगुरू और सुखदेव को फ़ांसी दी गई थी, अब उस चौराहे को भगत सिंह के नाम पर रखने की प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी गई है। श्रद्धांजली समारोह आयोजित करने की औपचारिकता निभाने के साथ-साथ उन महापुरुषों के विचारों को अपनाने की अत्यन्त आवश्यकता है। इस समय देश साम्प्रदायिक राजनीति के दौर में से गुजर रहा है। विभिन्न साम्प्रदायिक राजनीतिक दलों व संस्थाओं द्वारा समय-समय पर साम्प्रदायिक दंगे प्रायोजित किए जाते रहे हैं जिनमें प्रमुख हैं-दिल्ली में सिक्ख विरोधी दंगे, गुजरात में गोधरा कांड के बाद मुसलमानों का नरसंहार, उत्तर प्रदेश के मुज़फ़्फरनगर में दंगे। चुनाव के समय अपने वोट बैंक का ध्रुवीकरण करने के लिए साम्प्रदायिक शक्तियां कोई संकोच नहीं करती। इसलिए इस स्थिति से निपटने के लिये साम्प्रदायिक दंगों व उनके इलाज के संबंध में पत्रिका 'किरती' के जून 1928 के अंक में प्रकाशित भगत सिंह के लेख का उद्धरण करना प्रासंगिक होगा।

''भारतवर्ष की दशा इस समय बड़ी दयनीय है। एक धर्म के अनुयायी दूसरे धर्म के अनुयायियों के जानी दुश्मन है। अब तो एक धर्म का होना ही दूसरे धर्म का कट्टर शत्रु होना है। यदि इस बात का यकीन न हो तो लाहौर के ताजा दंगे ही देख लें। किस प्रकार मुसलमानों ने निर्दोष सिक्खों, हिन्दुओं को मारा है और किस प्रकार सिक्खों ने भी वश चलते कोई कसर नहीं छोड़ी है। यह मार काट इसलिए नहीं की गईं कि फलां आदमी दोषी है, बल्कि इसलिए कि फलां आदमी हिन्दू है या सिक्ख है या मुसलमान है। जब स्थिति ऐसी हो तो हिन्दुस्तान का ईश्वर ही मालिक है। ऐसी स्थिति में हिन्दुस्तान का भविष्य बहुत अंधकारमय नज़र आता है। इन धर्मों ने हिन्दुस्तान का बेड़ा गर्क कर दिया है। और अभी पता नहीं कि ये धार्मिक दंगे भारतवर्ष का पीछा कब छोड़ेंगे। इन दंगों ने संसार की नज़रों में भारत को बदनाम कर दिया है। और हमने देखा है कि अन्धविश्वास के बहाव में सभी बह जाते हैं। कोई बिरला ही हिन्दू, मुसलमान या सिख होता है, जो अपना दिमाग ठंडा रखता है, बाकी डण्डे-लाठियां, तलवारें-छुरे हाथ में पकड़ लेते हैं और आपस में सिर-फ़ोड़कर मर जाते हैं।''

''जहां तक देखा गया है इन दंगों के पीछे साम्प्रदायिक नेताओं और अखबारों का हाथ है। दूसरे सज्जन जो साम्प्रदायिक दंगों को भड़काने में विशेष हिस्सा लेते रहे हैं, वे अखबार वाले हैं। अखबारों का असली कर्त्तव्य शिक्षा देना, लोग़ों की सकीर्णता निकालना, साम्प्रदायिक भावना हटाना, परस्पर मेल-मिलाप बढाना और भारत की सांझी राष्ट्रीयता बनाना था, लेकिन इन्होंने अपना मुख्य कर्त्तव्य अज्ञानता फैलाना, संकीर्णता का प्रचार करना, साम्प्रदायिक बनाना, लड़ाई झगड़े करवाना और भारत की सांझी राष्ट्रीयता को नष्ट करना बना लिया है।

भगत सिंह ने जहां साम्प्रदायिक दंगों का विश्लेषण किया, वहीं उन्होंने दंगों को रोकने का इलाज भी बताया। उनके अनुसार यदि इन साम्प्रदायिक दंगों की जड़ खोजी जाए तो उसका कारण आर्थिक ही जान पड़ता है। बस, सभी दंगों का इलाज यदि कोई हो सकता है तो वह भारत की आर्थिक दशा में सुधार से ही हो सकता है, क्योंकि भारत के आम लोग़ों की आर्थिक दशा इतनी खराब है कि एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को चवन्नी देकर किसी और को भी अपमानित करवा सकता है। भूख और दुख से आतुर होकर मनुष्य सभी सिद्धांतों को ताक पर रख देता है। सच है, मरता क्या नहीं करता।

लोग़ों को परस्पर लड़ने से रोकने के लिये वर्ग चेतना की जरूरत है? गरीब मेहनतकशों व किसानों को स्पष्ट समझ लेना चाहिए कि तुम्हारे असली दुश्मन पूंजीपति है, इसलिए तुम्हें इनके हथकंडों से बचकर रहना चाहिए और इनके हत्थे चढ कुछ न करना चाहिए। संसार के सभी ग़रीबों के, चाहे वो किसी जाति, रंग, धर्म या राष्ट्र के हों, अधिकार एक ही हैं। तुम्हारी भलाई इसी में है कि तुम धर्म, रंग, नस्ल और राष्ट्रीयता और देश के भेदभाव मिटाकर एकजुट हो जाओ और सरकार की ताकत अपने हाथ में लेने का यत्न करो। इन यत्नों में तुम्हारा नुकसान कुछ नहीं होगा, इससे किसी दिन तुम्हारी जंजीरें कट जायेंगी और तुम्हें आर्थिक स्वतंत्रता मिलेगी।

इन दंगों में वैसे तो बड़े निराशाजनक समाचार सुनने में आते हैं, लेकिन कलकत्ते के दंगे में एक बात बहुत खुशी की सुनने में आई। वह यह कि वहां दंगों में ट्रेड यूनियनों के मज़दूरों ने हिस्सा नहीं लिया है और न ही वह परस्पर गुत्थमगुत्था ही हुए, वरन् सभी हिन्दू मुसलमान बड़े प्रेम से कारखानों आदि में उठते बैठते और दंगे रोकने के भी यत्न करते रहे। यह इसलिए कि उनमें वर्ग चेतना थी और वे अपने वर्गहित को अच्छी तरह पहचानते थे। वर्ग चेतना का यही सुंदर रास्ता है, जो साम्प्रदायिक दंगे रोक सकता है।

1914-15 के शहीदों ने धर्म को राजनीति से अलग कर दिया था। वे समझते थे कि धर्म व्यक्ति का व्यक्तिगत मामला है, इसमें दूसरे का कोई दखल नहीं होना चाहिए। न ही इसे राजनीति में घुसाना चाहिए, क्योंकि यह सरबत को मिलाकर एक जगह काम नहीं करने देता। इसलिए गदर पार्टी जैसे आंदोलन एकजुट व एकजान रहे, जिसमें सिक्ख बढ़-चढ़कर फ़ांसियों पर चढ़े और हिंदू-मुसलमान भी पीछे नहीं रहे। इस समय कुछ भारतीय नेता भी मैदान में उतरे हैं, जो धर्म को राजनीति से अलग करना चाहते हैं। झगड़ा मिटाने का यह भी एक सुंदर इलाज है और हम इसका समर्थन करते हैं। यदि धर्म को अलग कर दिया जाए तो राजनीति पर हम सभी इकट्ठे हो सकते हैं, धर्मों में चाहे हम अलग-अलग ही रहें।

हमारा ख्याल है कि भारत के सच्चे हमदर्द हमारे बताए इलाज पर जरूर विचार करेंगे और भारत का इस समय जो आत्मघात हो रहा है, उससे हमें बचा लेंगे। परंतु भगत सिंह द्वारा सुझाए गए इलाज की तरफ़ कोई ध्यान नहीं दिया गया। इसके विपरीत अखबारों के साथ-साथ टेलिविज़न ने भी अन्धविश्वास और साम्प्रदायिकता फ़ैलाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। टेलिविज़न के विभिन्न चैनल अपनी टीआरपी बढ़ाने के चक्कर में कुछ भी करने को तैयार रहते हैं। समाज में वर्ग चेतना न आ सके इसलिए समाज को जाति, धर्म व क्षेत्रीयता में बांटने के हर सम्भव प्रयास किए जा रहे हैं। धर्म की राजनीति में घुसपैठ पहले से भी ज़्यादा हो गई है। अर्थिक विषमता बढ़ती जा रही है। साम्प्रदायिक राजनीतिक दल और संस्थाएं चुनाव के समय लोग़ों को अपने पक्ष में एकजुट करने के लिए उक्त वर्णित उपायों को नज़रअंदाज कर साम्प्रदायिक दंगें प्रायोजित करने में कोई संकोच नहीं करते। इसलिए देश में साम्प्रदायिक दंगे बढते जा रहे हैं। वास्तव में साम्प्रदायिकता की रोकथाम के लिए भगत सिंह द्वारा सुझाए गए उपायों को अपनाने के लिए जनता को ही सचेत होकर एकजुटता के साथ संघर्ष करना होगा।''

तुर्की-ब-तुर्की

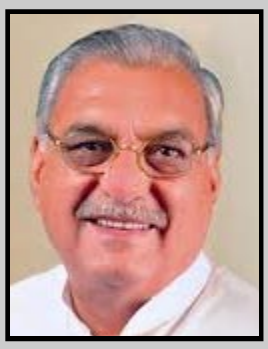

CM हुड्डा
प्रशासन के लिए नहीं केवल CLU के लिए

''यह मामला प्रशासनिक है। इसमें मुझे कुछ नहीं कहना।''

(भारतीय वन सेवा के अधिकारी संजीव चतुर्वेदी की वार्षिक रिपोर्ट में हरियाणा सरकार द्वारा की गयी विपरीत टिप्पणियों को राष्ट्रपति द्वारा खत्म किये जाने पर मुख्यमंत्री हुड्डा ने उपरोक्त जवाब दिया। विदित रहे कि संजीव की गिनती भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ने वाले अधिकारियों में होती है और मुख्यमंत्री हुड्डा व वनमन्त्री किरण चौधरी द्वारा तंग किये जाने पर वे फ़िलहाल दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में मुख्य वीजिलेंस अधिकारी के रूप में कार्यरत हैं।)

हमारा कहना है-

- हुड्डा साहब की प्रशासनिक मामलों में कोई दिलचस्पी नहीं है, यह तो सारा हरियाणा जानता है। राज्य का तार-तार हुआ प्रशासन इसी बात की गवाही देता है। जिस अधिकारी का जो जी चाहे करे, जनता गयी भाड़ में। बस प्रशासन का एक ही लक्ष्य है कि राजनीतिक आकाओं को खुश रखा जाय।
- वैसे संजीव चतुर्वेदी का मामला मात्र प्रशासनिक मामला नहीं है। यह राजनीतिक संरक्षण के तले चलाये जा रहे व्यापक भ्रष्टाचार का मामला है संजीव ने अपने वरिष्ठ अधिकारियों की ही नहीं, वन मन्त्री किरण चौधरी और स्वयं हुड्डा जी आपके सचिवालय की मिलीभगत की पोल-पट्टी भी खोली थी। इसी लिये आप सभी ने उनकी वार्षिक रिपोर्ट खराब की जिसे अब राष्ट्रपति ने ठीक किया है।
- वैसे, हुड्डा जी हम सभी जानते हैं कि आपकी रुचि सी एल यू में ही रही है। पैसे की लूट के इस कारोबार से आपने अपना घर तो भरा ही है, अपने राजनीतिक आकाओं का घर भरकर इन 10 सालों में अपनी मुख्यमंत्री की कुर्सी भी पक्की की हुयी है।
- चलते-चलते हम यह भी बता दें कि आने वाले चुनावों में जनता भी अपनी रुचि दिखाने जा रही है, आपको और आपके आकाओं को सत्ता से बाहर भेजकर। हो सकता है तब आपको जेल भी जाना पड़े-बिना आपकी रुचि पूछे।

राहुल

''जिस देश में प्रधानमंत्री को न्याय नहीं मिल सकता तो वहां आम ग़रीब आदमी को न्याय कैसे मिल सकता है।'' (अपने पिता राजीव गांधी के हत्यारों की रिहाइ के संदर्भ में)

हमारा कहना है-

- राहुल जी, चलो इस बहाने आपको यह तो पता चल गया कि आम ग़रीब आदमी को कैसा न्याय प्रदान कर रही है आपकी पुश्तैनी न्यायप्रणाली।
- कहावत है, जाके पैर ना फटे बिवाई, वो क्या जाने पीर पराई। राहुल जी न्याय न मिलने का दर्द तो वही जान सकता है जिसे न्याय न मिले। देश की जनता तो यह दर्द पीढियों से संजोय बैठी है। हां आपके खानदान को जरुर आज पहली बार इसका अनुभव हो रहा है।
- अन्याय की इस व्यवस्था को बनाने व चलाने वाला और कोई नहीं है राहुल जी, यह सब आपके बाप-दादाओं की ही देन है।